खज़ानों से भरे जहाज़ को खेना

लेखन और चित्रः लाइसल वाइल
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

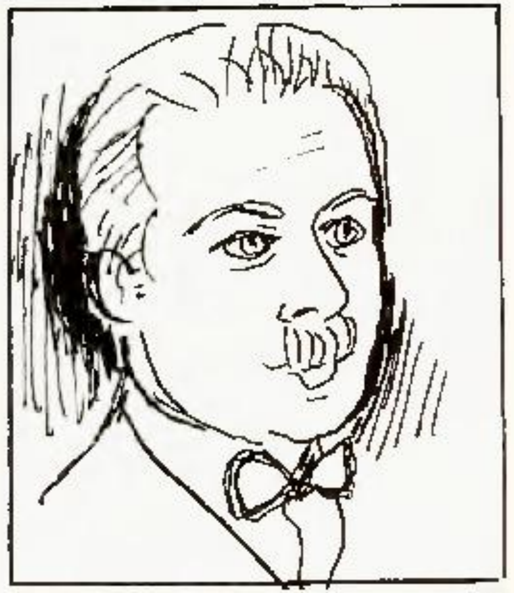

मेरे माता-पिता और बीते कल, आज, और
आने वाले कल के लिए

हम सब एक ऐसे जहाज़ पर सवार हैं जो हर दिन आगे बढ़ता जाता है। जहाज़ में एक ऐसा कमरा है जिसमें हम अपने सफ़र के दौरान पाए खज़ानों को सहेज कर रखते हैं। यह जहाज़ दरअसल हमारी ज़िन्दगी है और ये खज़ाने हमारी यादें हैं, जिन्हें हम अपने लिए एहतियात से संभालते हैं। यादें सिर्फ बड़े-बुज़ुर्गों के लिए नहीं होतीं। हम सबकी, हरेक की, अपनी-अपनी यादें होती हैं। हरेक इन्सान योजना बनाता है कि हम आज और कल क्या करेंगे। पर जब आज और कल बीत जाते हैं, वे बीता हुआ कल बन जाते हैं। और इन दिनों जो कुछ हुआ था वे सब यादें बन जाती हैं। यादें जादुई हो सकती हैं। कम्प्यूटर से विपरीत, जो हमें केवल तथ्य ही वापस देता है, यादें हमारी भावनाएं, ध्वनियाँ, खुशबुएं, छवियाँ, हंसी और आँसुओं को भी लौटा लाती हैं। वे हमें अपनी बेवक़ूफ़ी भरी गलतियों को वापस दोहराने से बचने में मदद करती हैं - जैसे पिछली बार हमने जब हद से ज़्यादा चॉकलेट केक खाया था तब हमारी हालत कितनी ख़राब हुई थी यह याद आ जाता है। जो हम याद करते हैं वह हमारी कहानी होती है। हमारी स्मृतियाँ, हमारे ख़ास पल होते हैं जिन्हें हम यादों से निकाल कर उनका मज़ा उठा सकते हैं, या दोस्तों के साथ साझा कर सकते हैं।

ये मेरे ख़ास खज़ाने हैं। मैं इन्हें तुम्हारे साथ साझा करना चाहती हूँ।

मेरा जन्म अटलांटिक महासागर के उस पार
ऑस्ट्रीया नामक देश के
विएना शहर में हुआ था।

मेरी सबसे शुरुआती याद है, गरम और महफ़ूज़ महसूस करना। मेरे माता-पिता मुझे प्यार जो करते थे।

याद आता है कि जब मैं छोटी ही थी, मै अपनी माँ और बड़ी बहन के साथ लम्बी छुट्टियाँ बिताने गई थी। हमने ड्रिन्डल पोशाकें पहनीं थीं, जो मुझे बेहद अच्छी लगी थीं। पर हमने सफेद जूते और मैंने एक बड़ी टोपी भी पहनी थी जिस पर एक लम्बा पर था। मुझे यह ख़ास अच्छा नहीं लगा था।

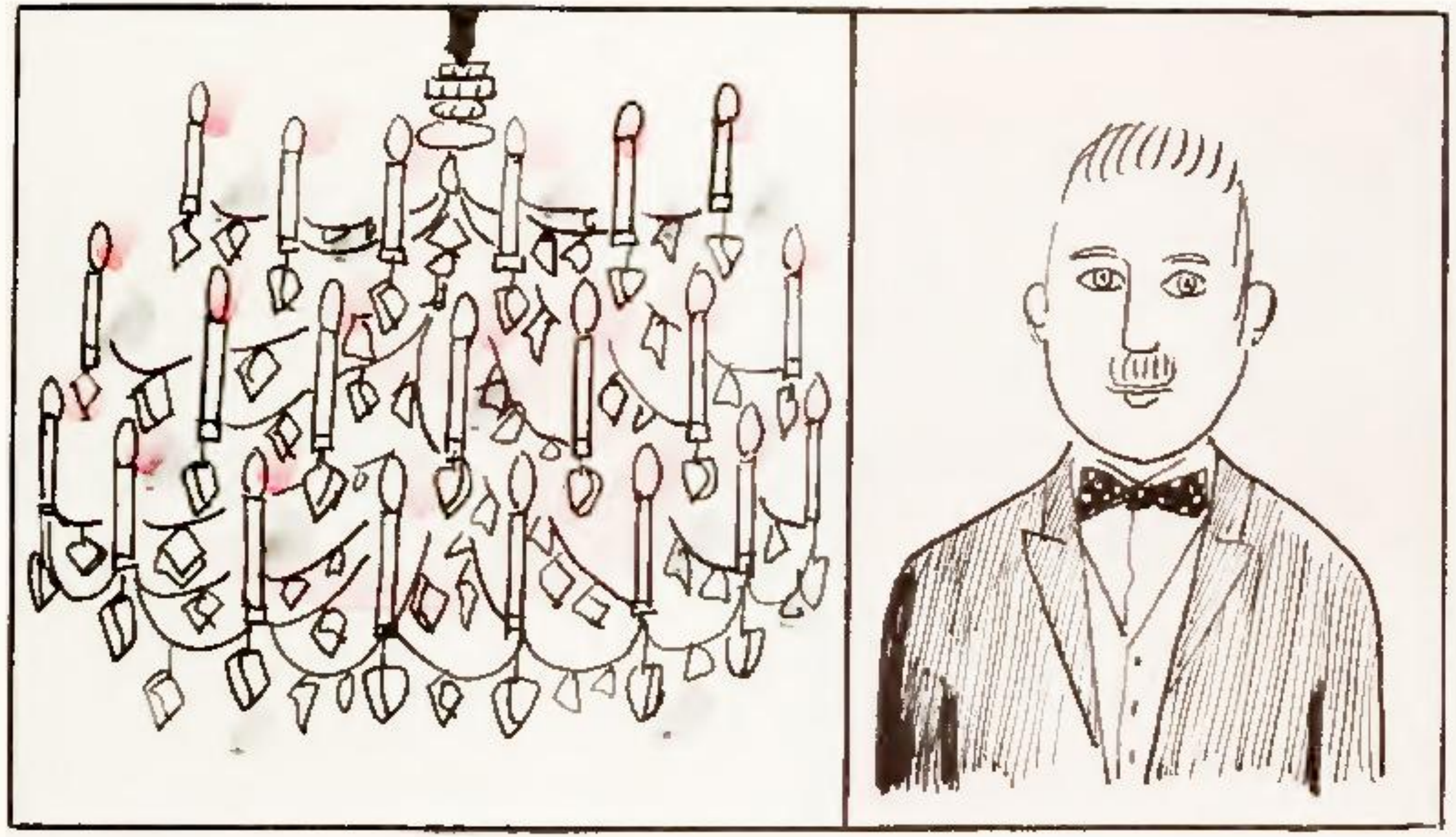

जब हम वापस शहर लौटे, हम एक नए अपार्टमेंट में रहे, जिसमें एक खनकता झाड़-फानूस था। वह मुझे किसी परी के महल की याद दिलाता था। और मेरे एक नए डैड भी थे जिनकी मूंछें थीं।

हम अपने अपार्टमेंट तक लिफ्ट से जाते थे। पर नीचे हमें पैदल ही आना पड़ता था। जब मैं ऊँची हो अपना हाथ ऊपर उठाती, तो वह बटन दबा सकती थी जो हमें अपने तल्ले तक ले जाता था।

एक सुबह मेरी बहन ने मुझे अपने बिस्तर में घुसाया और बताया कि वह शादी करने वाली है। मुझे पता था कि उसका घर में न होना मुझे बड़ा ही अखरेगा। और अखरा भी।

पर मुझे नया साथ भी मिला। अपार्टमेंट भवन में रहने वाली एक लड़की, बर्टा मेरी दोस्त बन गई। बर्टा हमारे अपार्टमेंट के सुपर (रख-रखाव करने वाला) की बेटी थी। हम दोनों को ही चित्र आँकना अच्छा लगता था। बर्टा हमेशा पोशाकें बनाया करती थी। पर मुझे लोगों को आँकना पसन्द था। खास तौर से नाविकों को और वे जिन जगहों पर जाते थे उन्हें बनाना पसन्द था। बर्टा का भाई नाविक था, इसलिए कभी मेरे चित्र उसके भी हुआ करते थे।

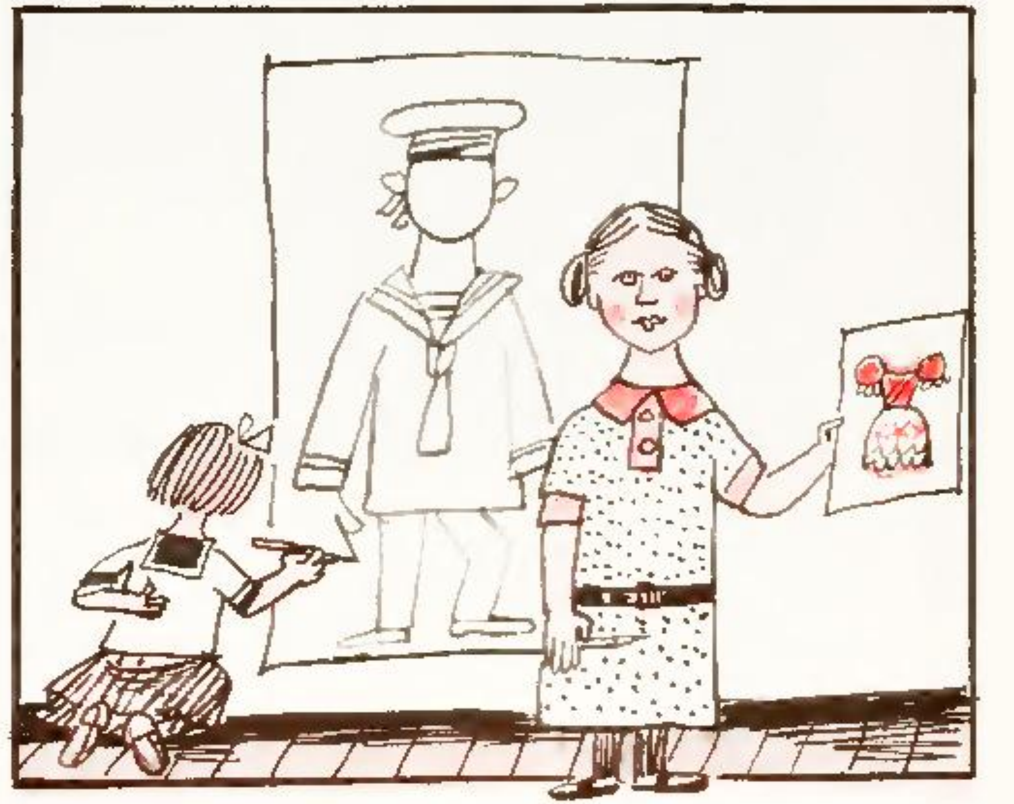

जब मैं छह साल की हुई, मैं स्कूल जाने लगी। मुझे चित्र आँकना और पढ़ना सीखना सबसे ज़्यादा अच्छा लगता था। जल्द ही मैं कक्षा की सबसे तेज़ पढ़ने वाली बन गई।

अपार्टमेंट भवन के ठीक सामने एक छोटी दुकान थी जो छोटी पेपरबैक क़िताबें बेचा करती थी। मैं अपना पूरा जेब-खर्च वहीं खर्चती थी। मैं एक क़िताब ख़रीदती और उसे घर ले जाकर पढ़ती, तब उसे लौटाती और दूसरी ले आती। कभी-कभी तो एक ही दोपहर में मैं एक क़िताब की कीमत पर चार-चार क़िताबें पढ़ लेती थी।

तक़रीबन इसी समय मैं एक मशहूर नर्तकी से नाचना सीखने लगी। हमारी कक्षा शोपें की रचना 'पोलोनेसे' की धुन पर नाचने से शुरु होती, तब हम समूह नृत्य, वॉलत्ज़, और बैले नाचते। हर कक्षा के अन्त में हम अपनी मर्ज़ी से नाच सकते थे। क्या मज़ा आता था! मुझे तो लगता था कि नाचना बन्द ही नहीं करना पड़े।

हमारा परिवार हर रविवार को दोपहर एक बजे साथ-साथ खाना खाने इकट्ठा होता था। खाने के बाद मेरे डैड और मैं 'चरडैश' नाचते, और मेरी बहन पियानो पर उसकी धुन बजाती। मेरे डैड हंगरी से थे, चरडैश हंगरी का नृत्य था।

तब मैं अपने जीजा के साथ अमरीकी नृत्य करती। वे अमरीकी नहीं थे, पर उन्हें अमरीकी नाच पसन्द था। वे बड़े ख़ूबसूरत थे। उनके चमकदार काले बाल थे। मेरी बहन बताती थी कि वे अपने बालों को सलीके से संवारे रखने के लिए बालों की जाली का इस्तेमाल किया करते थे।

हमारी रसोइदारिन भी मेरे डैड की ही तरह हंगरी से थीं। हम सबको उनके हाथों से पका खाना बेहद अच्छा लगता था। जब वे खाना बना चुकतीं वे बाल्कनी में अपने जूते उतार कर बैठतीं। यों सुस्ताते समय वे मुझे अपने गाँव की कहानियाँ सुनाती, जहाँ वे पैदा हुई थीं। मुझे उनके किस्से सुनना बहुत पसन्द था।

मेरा एक पालतू कुत्ता, दो सफेद खरगोश और दो पाखी थे। मैं उन्हें ख़ूब प्यार करती थी।

एक दिन जब मैं स्कूल से घर लौटी, मेरे पाखियों में एक मुझे कुछ फर्क लगा। मैं विश्वास करना चाहती थी वह वही 'हांसी' (सभी परिन्दों को हांसी कहा जाता था) है . . . पर दिल में मैं जानती थी कि मेरी एक चिड़िया मर चुकी है और माँ ने उसकी जगह एक नई ख़रीद दी है, ताकि मैं दुखी न होउं।

एक दिन मैं बहुत बीमार हो गई। इतनी बीमार कि हर जगह से चिकित्सक मुझे जाँचने आए। उनके इलाज बड़े तकलीफ़देह थे, पर किसी भी इलाज से फ़ायदा नहीं हुआ।

मैंने उन्हें माँ को यह कहते सुना कि "बच्ची की मौत हो जाएगी।"

पर मेरी माँ नहीं चाहती थीं कि मैं मरूं। वे मुझे बेतहाशा प्यार करती थीं। वे दिन-रात मेरे पास बैठी रहती थीं। और मैं मरी नहीं। उनके प्यार ने मुझे दुरुस्त कर दिया। मेरी माँ अन्दर और बाहर से सचमें सुन्दर थीं।

मेरी बीमारी के दौरान कई लोगों ने मुझे फूल और पौधे भेंट किए। इनमें मेरा सबसे पसन्दीदा उपहार वह था जिसमें एक स्केटिंग रिंक बना हुआ था, जो देवदार के पेड़ों से घिरा था। उसमें स्केटिंग करती आकृतियाँ भी थीं।

मैं साल भर से भी ज़्यादा समय बीमार रही। मुझे फिर से चलना तक सीखना पड़ा। पर आख़िरकार मैं फिर से स्कूल जाने को तैयार थी।

जब मैं स्कूल गई मुझे यह पता ही नहीं था कि मैं पहले से फ़र्क दिखने लगी हूँ। पर जल्द ही मुझे इसका पता लग गया। बच्चे मेरी ओर इशारा करते और मुझ पर हंसते।

स्कूल से घर लौटने पर मैंने खुद को ग़ौर से देखा। मेरा चेहरा सचमें लग तो अजीब ही रहा था। मेरी बीमारी ने मेरा मुँह टेढ़ा कर दिया था। पर मेरा परिवार मुझे अब भी उतना ही प्यार करता था। जल्द ही मुझे पहले से फर्क दिखने की आदत हो गई।

अपने टेढ़े मुँह के साथ मैं अपने जहाज़ पर अपनी नई अच्छी और बुरी चीज़ें लिए आगे बढती चली, ताकि उन्हें भी अपनी यादों के खज़ाने में सहेज लूं।

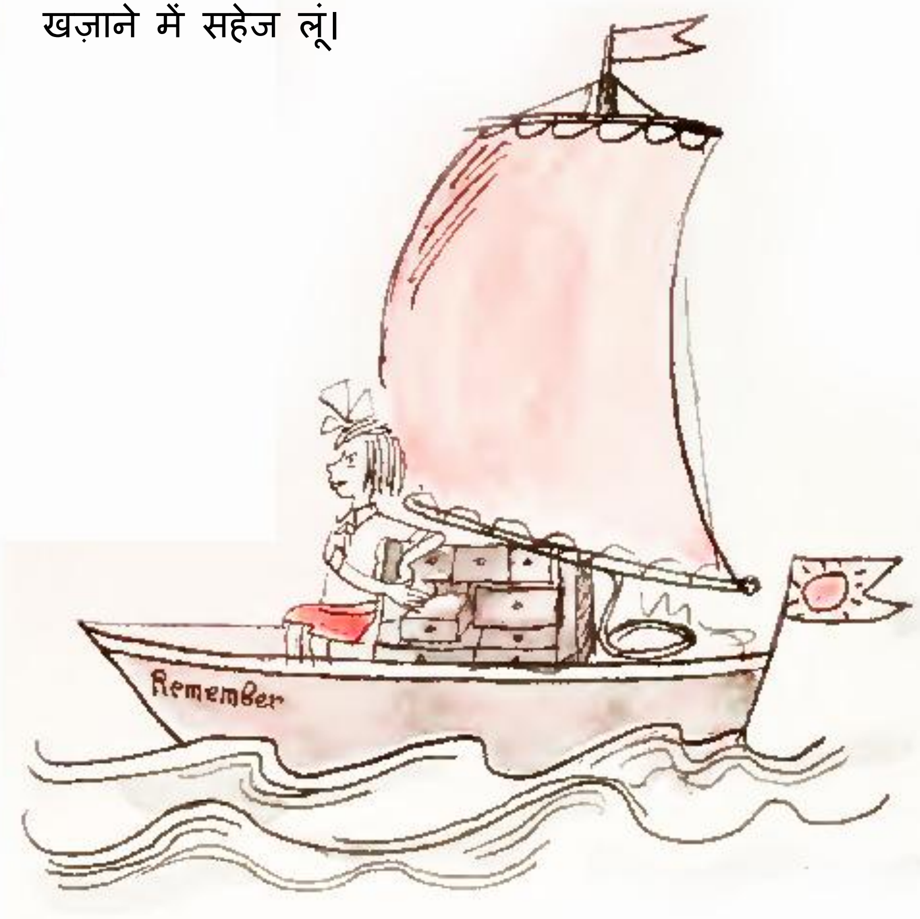

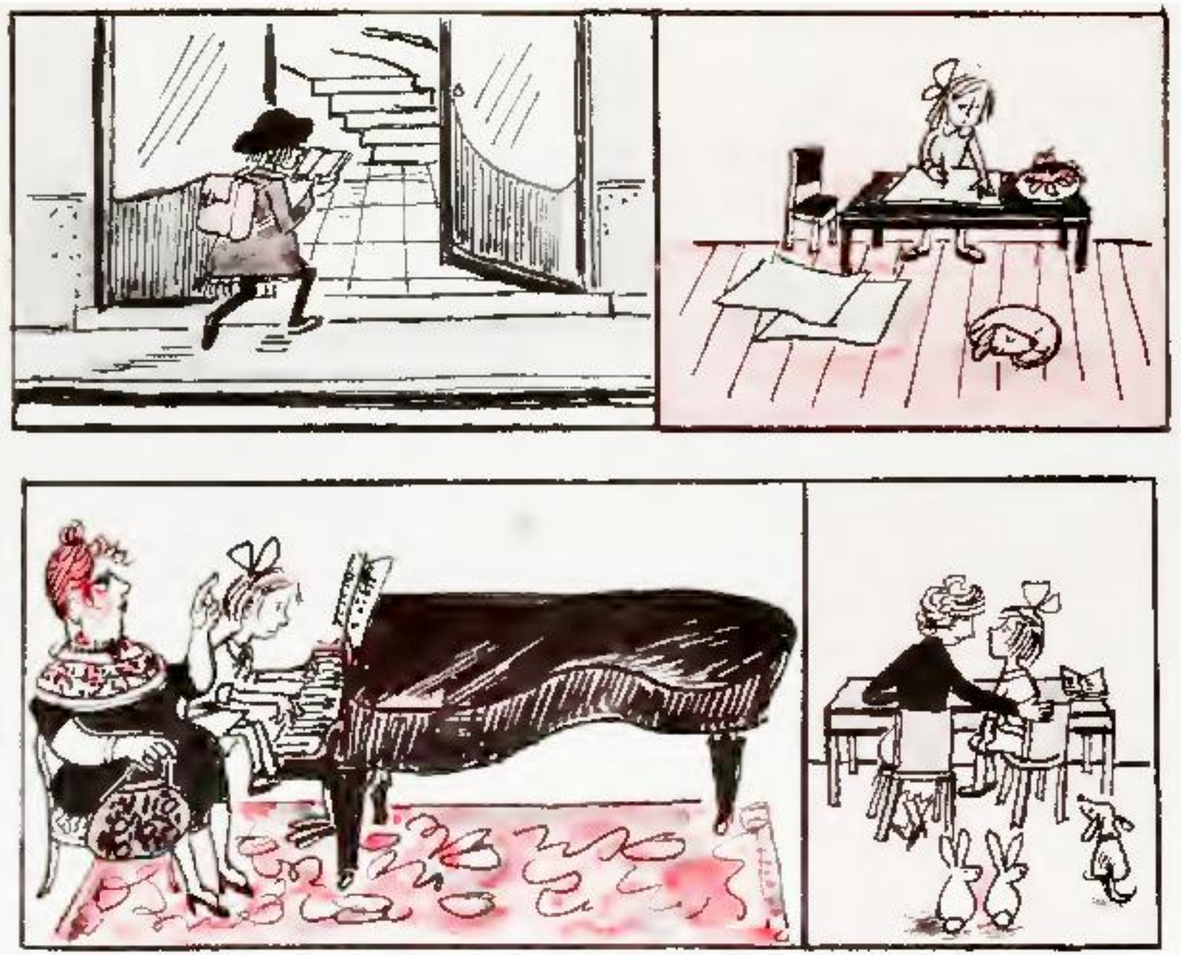

मैं खूब व्यस्त हो गई। मुझे पढ़ना और आँकना अब भी पसन्द था। मैं अब पियानो बजाना और फ्रांसीसी भाषा सीखने लगी। मैंने अपनी नृत्य की कक्षाएं भी फिर से शुरू कर दीं।

मेरा नाचना तब तक ठीक-ठाक चलता रहा, जब तक मुझे तितली-सा नाचने को न कहा गया। मुझे तितली जैसे पंख फड़फड़ाते एक से दूसरे फूल तक उड़ना था, मतलब एक बच्ची से दूसरी तक जाना था। मुझे कहा गया कि मैं में बड़ी सुन्दर तरीके से नीचे झुकूं, तब फौरन कूद कर दूसरी बच्ची की ओर बढ़ूं, मानो उड़ रही हूँ। पर नीचे झुकने के बाद मैं उठ ही नहीं सकी, मेरे पैर अब भी कमज़ोर थे। मुझे बहुत बुरा लगा और मैं खूब रोई।

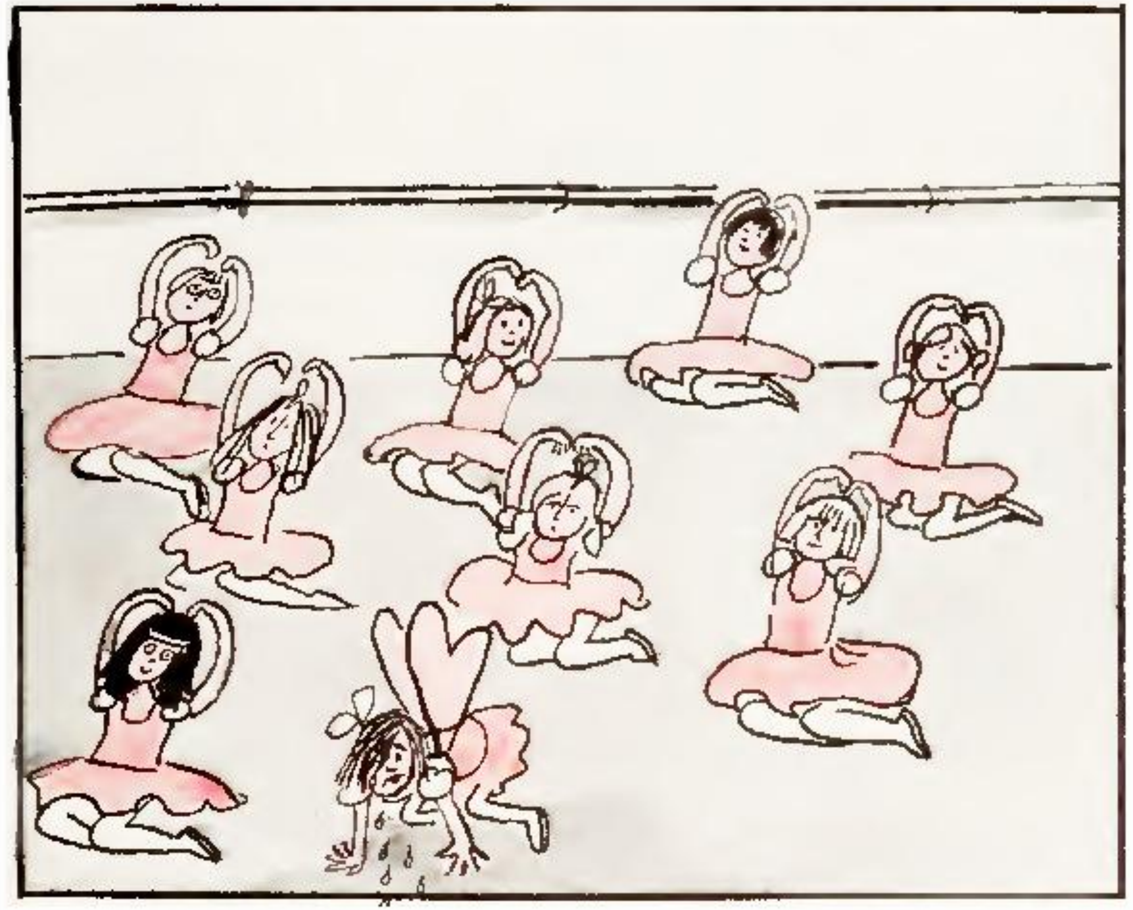

हाँ, मैं उस समय रोई।
पर धीरे-धीरे मैं लम्बी और ताकतवर बनी।
और मौसी भी बनी।
मेरी बहन अपने बेटे को
हमारे इतवार के भोज पर साथ लाने लगी।
वे जब भी आते, उसके नन्हे को मेरे बिस्तर
पर सुलाया जाता। वह कभी नहीं रोता था।

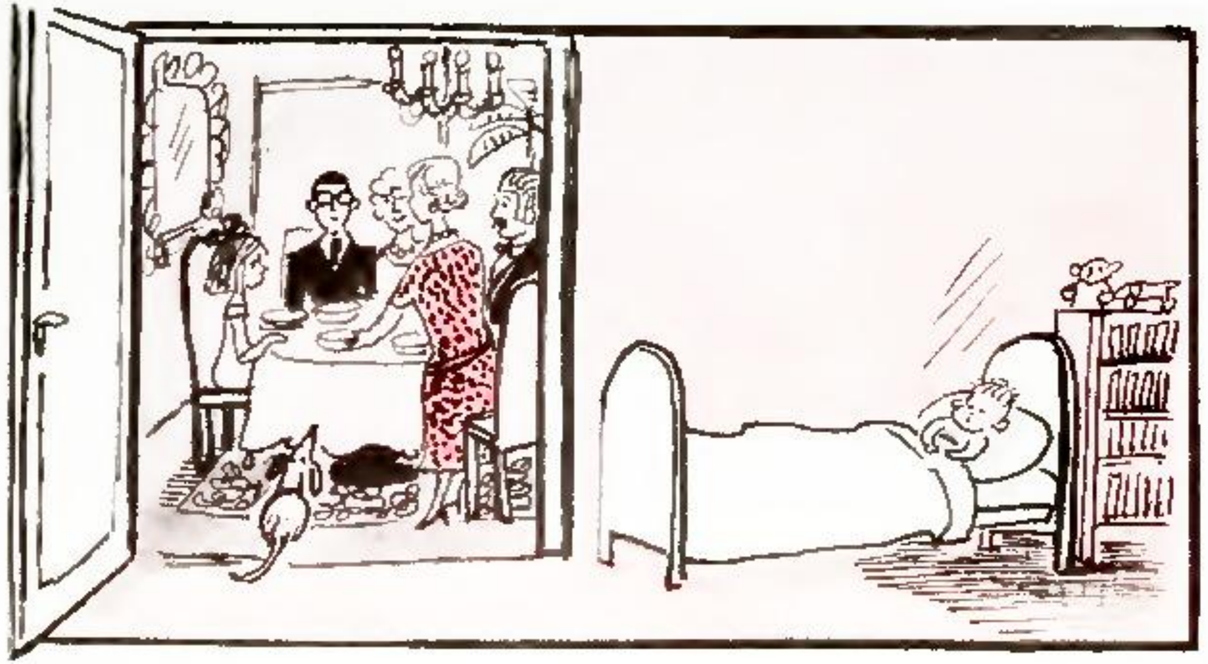

क्योंकि मुझे क़िताबों के लिए पैसे चाहिए थे, मैं कार्ड बनाने लगी। मुझे उम्मीद थी कि मैं उन्हें बेच सकूंगी। जिस दुकान से मैं क़िताबें ख़रीदा करती थी, उसकी मालकिन ने कहा कि वे मेरे कार्ड अपनी दुकान में रखेंगी। उनके बिकने पर मुझे पैसे दे दिया करेंगी। मेरे डैड मेरे पहले ग्राहक बने। पर दूसरे लोगों ने भी मेरे कार्ड ख़रीदे। मुझे बड़ा फ़क्र हुआ।

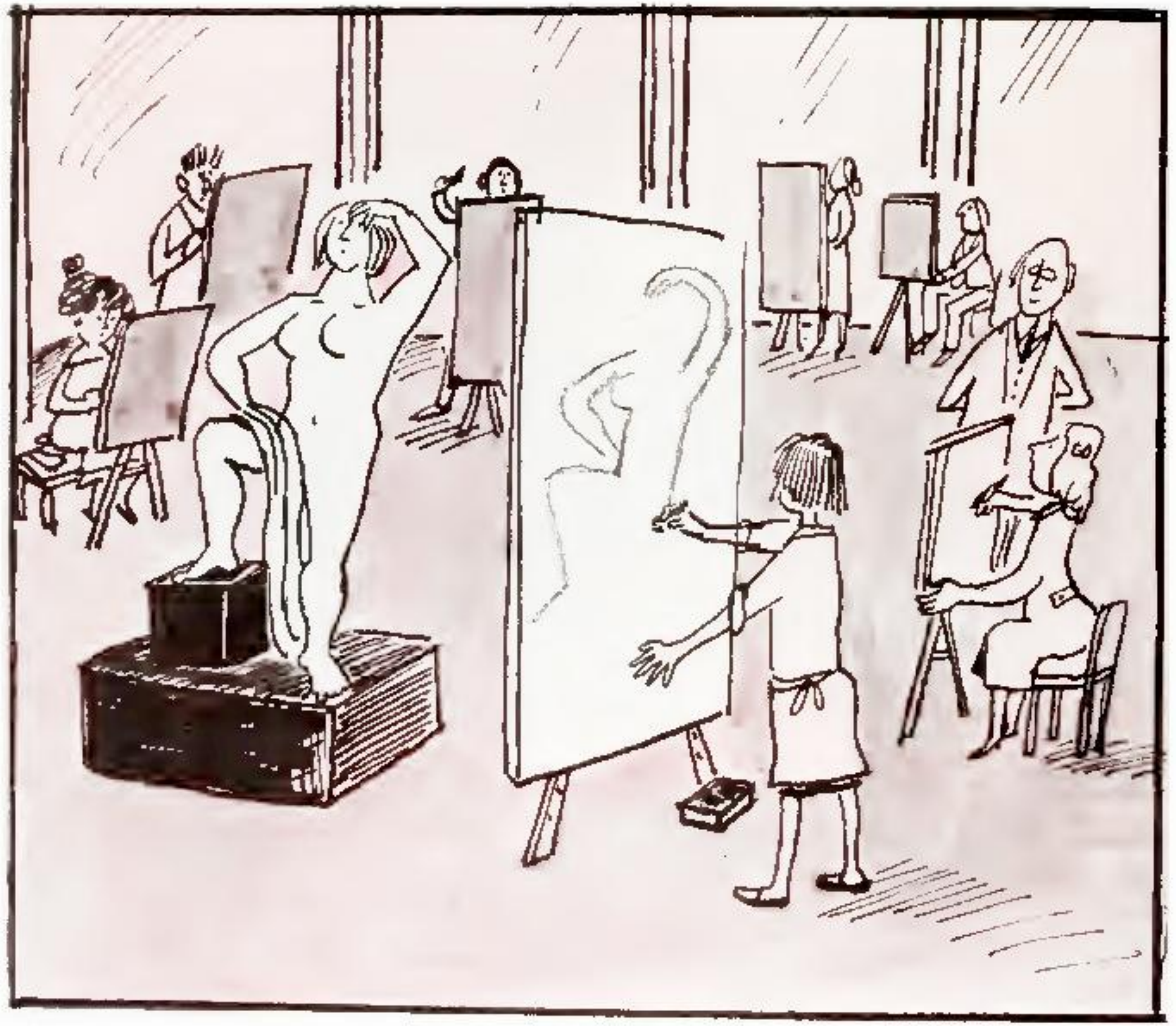

कला शाला में जाना मुझे बहुत अच्छा लगा। जब कक्षा में हम किसी का जीवन्त चित्र बनाते, तो मुझे लगता कि मैं बड़ी हो चुकी हूँ।

पर मैं इतनी बड़ी नहीं थी कि अपनी बड़ी बहन और चचेरी-ममेरी बहनों के साथ ख़ास पोशाकों वाले बॉल (एक प्रकार का नृत्य) में जा सकूं। हालांकि मुझे यह समझ नहीं आता था कि वे बच्चियों की तरह क्यों सजा करती थीं। मुझे लगता था कि खूबसूरत लम्बी पोशाकें पहनना ज़्यादा मज़ेदार होता है।

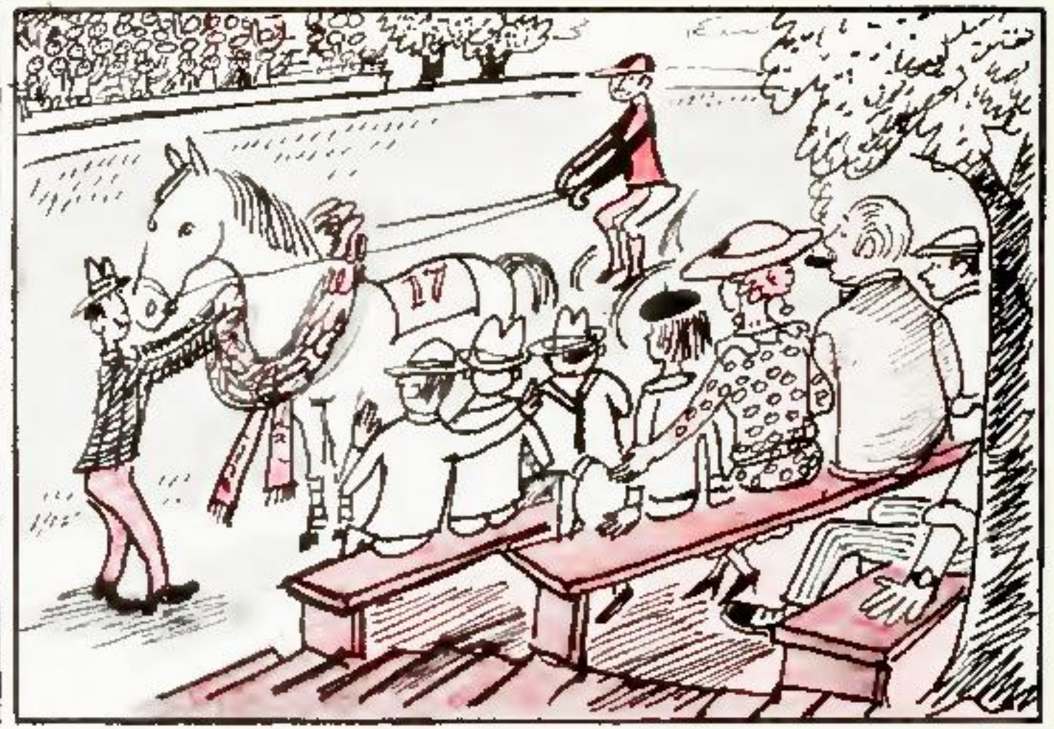

मुझे अपने डैड के साथ होना हमेशा मज़ेदार लगता था। वे सिगरेट के धुएं से बड़े छल्ले बनाया करते थे।

जब भी वे हमें घोड़ों की रेस में ले जाते, उन्हें दौड़ में हिस्सा लेने वाले सभी घोड़ों के पुरखों के नाम पता होते थे।

हर दिन दुकान बन्द करने के बाद मेरे डैड अपने दोस्तों के साथ अपने चहेते कॉफी घर में जाते थे। विएना में कॉफी घर ख़ास स्थान हुआ करते थे। जब मैं बारह साल की थी वे मेरी माँ और मुझे लाल मूली के साथ फ्रैंकफुर्टर्स् (सॉसेज) खिलाने ले गए थे। मुझे अब तक उसका स्वाद याद है। पर सबसे अच्छी बात यह थी कि कॉफी घर में दुनिया भर की पत्रिकाएं और अख़बार होते थे, ताकि सब उन्हें देख और पढ़ सकें। उनमें कुछ मुझे समझ आते थे, बाकी कतई नहीं। पर मैं उन्हें देख सोचा करती थी कि मेरी दुनिया ही सबसे अच्छी है।

जब एक स्थानीय पत्रिका ने मेरा बनाया एक चित्र छापा, मैं चौदह बरस की थी। जल्द ही मैं उस पत्रिका और एक दैनिक अख़बार के लिए हर सप्ताह चित्र बनाने लगी। मेरी माँ को इतना फ़क्र होता था कि वे हर बार मेरे चित्रों के छपने पर अपनी क़रीबी सहेलियों को फोन किया करती थीं। मेरे डैड भी उस पत्रिका या अख़बार को कॉफी घर के अपने सभी दोस्तों को दिखाते। उन्हें भी फ़क्र था।

मेरी दुनिया सचमें नायाब थी। मैं बखुशी आगे बढ़ती गई और याद करने के लिए खज़ाने इकट्ठा करती गई।

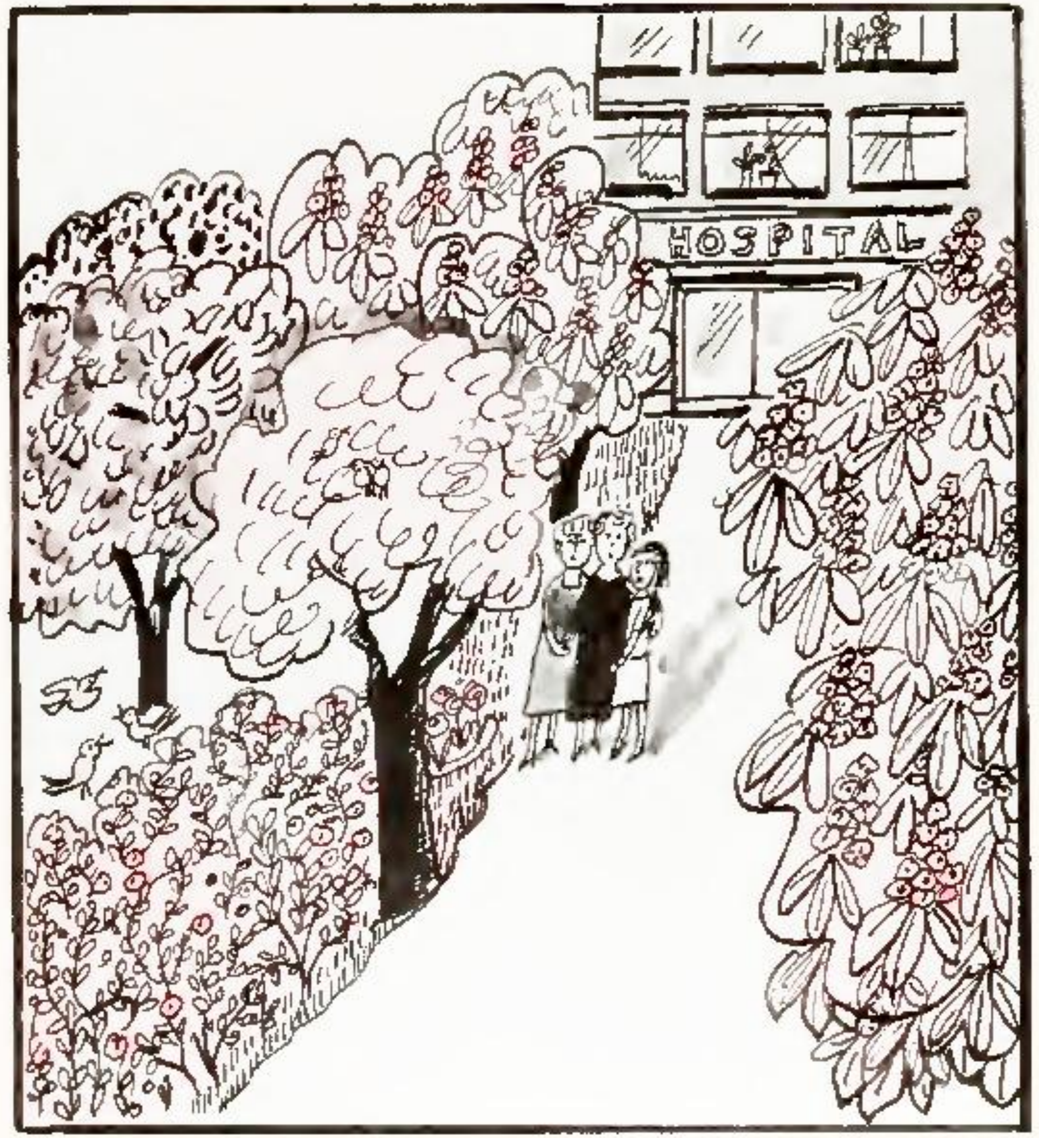

इसके बावजूद मेरी सारी यादें सुखद नहीं थीं। मेरे डैड बुरी तरह बीमार पड़े। डॉक्टरों ने कहा कि वे बेहद ज़्यादा सिगरेट पीते रहे हैं। और एक खुशनुमा दिन, जब फूल हवा को महका रहे थे (मैं उन्हें अब तक सूंघ सकती हूँ) और परिन्दे चहचहा रहे थे, उनकी मौत हो गई। मुझे समझ ही नहीं आया कि ऐसे खुशनुमा दिन इतना दुख कैसे आ सकता है।

उस साल और भी तमाम चीज़ें घटीं, जिन्हें मैं समझ नहीं सकी। एक नए नेता और नई व्यवस्था मेरी दुनिया को बदलने लगे। लोगों का एक बड़ा समूह दूसरे समूहों और लोगों से नफ़रत करने लगा। अगर आप सही समूह के नहीं होते तो आपको और आपके परिवार को ख़त्म कर दिया जा सकता था।

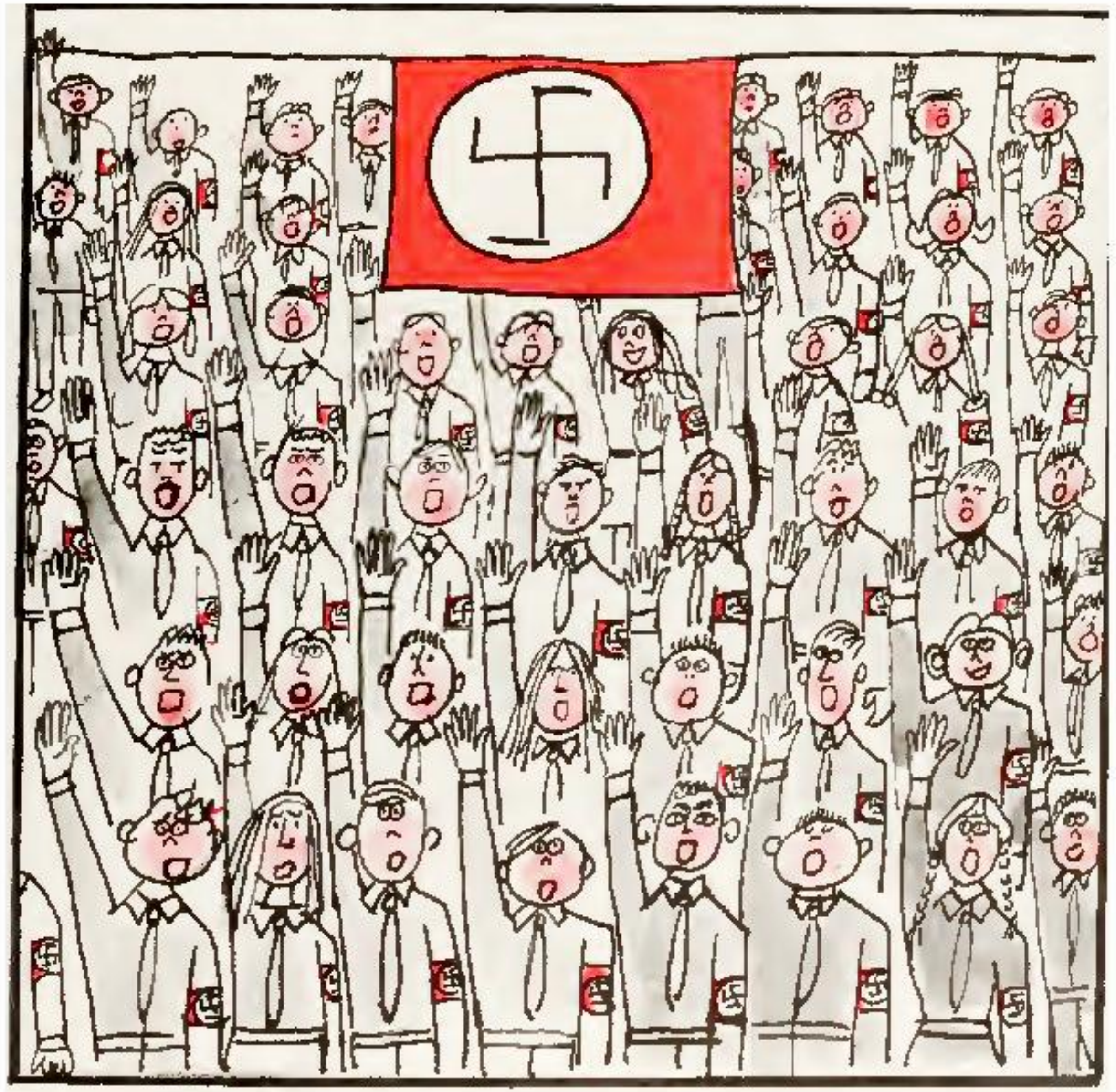

इन स्थितियों से बच निकलने के लिए किस्मत का साथ ज़रूरी था . . .

मैं खुशकिस्मत थी। एक देश में कुछ समय बिताने के बाद - जहाँ मैं अपना गुज़ारा चलाने के लिए चित्र आँक सकी - एक बड़ा जहाज़ मुझे एक नई दुनिया में ले आया।

जब मैं न्यू यॉर्क पहुँची, मैं बच्ची नहीं थी। फिर भी एक बच्ची की ही तरह मुझे एक नई भाषा और एक नई जगह रहना सीखना पड़ा। मेरी बहन और उसका बेटा मुझसे पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे। मेरी माँ दो साल बाद आईं, पर वे सिर्फ़ कुछ ही सप्ताह ज़िन्दा रहीं।

अच्छा या दुखद, जो भी याद रहता है, वह सब अहम होता है। हमारी यादें हमें वह इन्सान बनाती हैं, जो हम हैं। हरेक इन्सान अलग-अलग चीज़ों को याद रखता है, अलग चीज़ों पर अचरज करता है, अलग लोगों को याद और प्यार करता है।
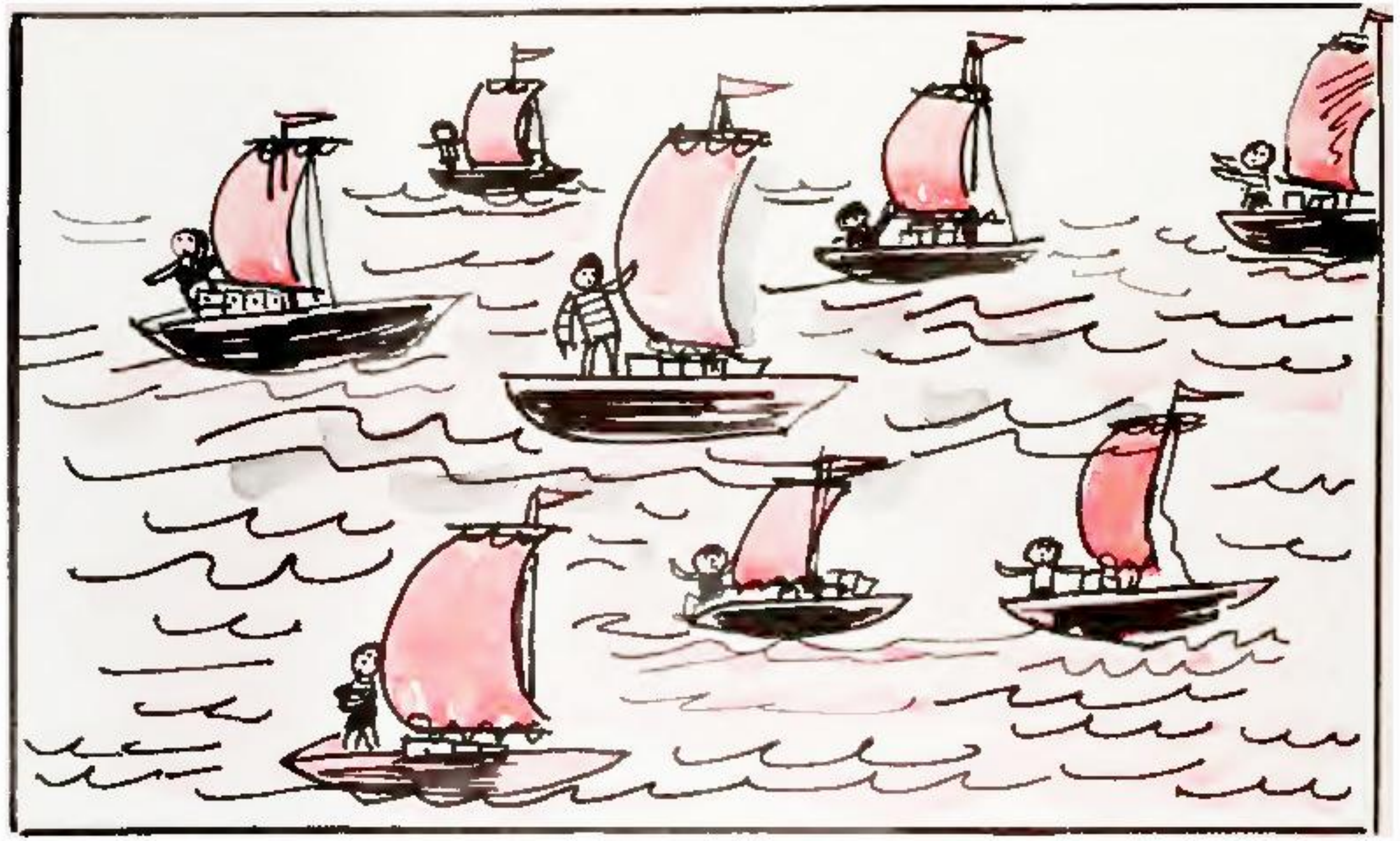
तुम हर दिन आगे बढ़े चले जा रहे हो, और तुम्हारे पास भी खज़ानों से भरा अपना एक ख़ास जहाज़ है। वे तुम्हारी अपनी कहानी को बनाते हैं। पल भर थम कर अपने अतीत के बारे में सोचो और याद करो जब . . .